E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2020; 2(1): 231-233
Received: 16-11-2019
Accepted: 26-12-2019

डॉ. प्रदीप कुमार
पूर्व गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रदीप कुमार
पूर्व गवेषक, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

यात्रीक व्यंग्यात्मक साहित्यक चित्रण

डॉ. प्रदीप कुमार

सारांशः
अतीत आ भविष्यक संग सम्बन्ध स्थापित क'कए साहित्य अपन अस्तित्वक सत्यताक उद्घोषणा करैछ। विश्व–मानव उत्यन्त उत्सुकतापूर्वक साहित्यक गवीक्ष सँ अतीतक गिरि मह्यरक गुफा मे प्रवाहित जीवन–धाराक अवलोकन करैछ आ अपन गम्भीरतम उद्देश्यक विविध प्रकारक साधन, भूल आ संशोधन द्वारा प्राप्त करैत अपन भावी–जीवन कें सिंचित होइत देखबाक उत्कट अभिलाषा रखैछ अतीतक प्रेरणा आ भविष्यक चेतना नहि सँ साहित्य नहि। अतीत, वर्तमान आ भविष्यक कड़ीक अनन्त शृंखलाक रूप मे भावक सृष्टि होइत चल जाइव आ मानव अपन प्रगति क नियामादि, सिद्धांतादि कें अपन वास्तविक सत्ता का विकासक मंगल कंगन पहिरि क' अपन दूनू हाथसँ आवृत्त कयने रहैछ, विश्वकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर (1861–1941) क कथन छनि जे विश्व–मानवक विराट–जीवन साहित्य द्वारा आत्म प्रकाश करैछ। एहन साहित्यक ओकलनक तातर्य काव्यकार एवं मद्यकारक जीवनी, भाषा तथा पाठ सम्बन्धी अध्ययन तथा साहित्यक विधि विधादिक अध्ययन करने मात्र नहि, प्रत्युत ओकर सम्बन्ध संस्कृतिक इतिहास सँ अछि, मानव मन सँ, सभ्यताक इतिहास मे साहित्य द्वारा सुरक्षित मन सँ अछि।

प्रस्तावनाः
मैथिली साहित्य अपन परम्परावादी प्रशस्तमार्गक परित्याग क' कए गद्यक आश्रय ग्रहण क' नवीन मार्ग पर डेग राखि शनैःशनैः अग्रसर भेल तकर श्रेय आ प्रेय दुनू विगत शताब्दीकें छैक जे साहित्य सरिताक प्रवहमान धारा सहश कलकल छल–छल करैत अग्रसर भेल तकर साक्षी थिक विभिन्न विधादिक साहित्येहासक प्रकाशन। एहि स्वर्णिम कालक सहसाब्दीक सम्पूर्ण साहित्यकें स्थूल रूपें। दू धारा में विभाजित कयल जा सकैछ–काव्य धारा आ गद्य धारा। युग संधिक उत्कर्ष बेला मे साहित्यिक गतिविधि क क्षेत्र काव्य सँ बेशी गद्यकें प्रधानता भेटल। लोकक ध्यान राजनीति आ सामाजिक सुधार दिस गेलैक आ काव्यक विकासक लेल अनुकूल आराम ना पलखनिक वातावरण आब नहि रहलैक। नयोदिन रचनाकार कें कविता सहश विलास–वस्तु क लेल साधन आ समय नहि रहलनि। युग–सन्धिक उत्कर्ष बेधा मे उद्भूत विभिन्न साहित्यिक विधादि भीत्ति पर दृष्टिनिक्षेप अकारान्त क्रम सँ कयाल जाइत अछि जे विगत शताब्दी कोन रूपें एकरा स्वर्णकाल उद्घोषित करवाक दिशामे अवदान कयलक तकर संक्षिप्त रूपरेखा अपनेक समक्ष प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। आधुनिक भारतीय भाषा मे गद्य–साहित्यक आविर्भाव भारतीय जीवन मे ओहि मंजिलक द्योतक थिक जखन मध्ययुगीन वातावरण सँ बहरा क' वैज्ञानिकताक प्रतीक बनल। हमर समग्र गद्य साहित्य जीवनक परिष्करण आ उत्थानक साहित्य थिक। आइ एकरा माध्यमे हम अनार्राष्ट्रीय ज्ञान–विज्ञानक सम्पर्क मे अयलहुँ। मुसलमानी शासन काल मे अरबी–फारसी साहित्यक सम्पर्क भेला सँ गद्य रचना कें प्रोत्साहन नहि भेटि सकल। पूर्व आ पश्चिम साचर्कक फलरवरूप नव चेतना उत्पन्न भेल, समाज अपन हेरायल शक्तिकें जमाके' गतिशील भेल, सामहित्य मे गद्यक श्रीवृद्धि भेल। अताएव विगात शतावदी मैथिली गद्य क स्वर्ण काल थिक। आब ते ई साहित्यक प्रधान अंग बनि गेल अछि। एहि समयमे थिलांचल बासी पश्चिम क एक सलीव आ उन्नतिशील जाति क सम्पर्क मे अयलाह आ ओ जाति अपना संग यूरोपीय औद्योगिक क्रान्तिक पश्चात् सभ्यता ल' कए आयल। नवीन शिक्षा पद्धति, वैज्ञानिक आविष्कादिक प्रवृत्तिसँ मैथिली साहित्य अछूत नहि रहल। शासन सम्बन्धी आवश्यकता तथा जीवन परिस्थितक कारणें गद्य सदृश नवीन साहित्यिक माध्यमक आवश्यकता भेल आ वास्तव मे गद्य द्वारा मैथिली मे आधुनिकताक बीज वपन भेलैक। वस्तुतः नव शिक्षा–पद्धति मे पलित–पोषित शिक्षित समुदायक आविभविक कारणें मैथिली गद्य–परम्पराक क्रमवद्ध इतिहास विगत शताब्दीसँ उपलब्ध भ' रहल अछि। नवीनता जै भेटैत अछि मात्र गद्ययक रूप मे नवीनता एहि अर्थ मे जे ई साहित्यक प्रमुख आ स्थायी अंग बनि गेल अछि। गद्यक अटूट परम्परा भेंटैछ जे एकर उज्ज्वल भविष्यक संकेत करैछ। मिथिलांचल मे आधुनिताक बीजवपन गद्य रचना सँ मानल जयबाक चाही। वास्तव मे गद्ययक इतिहास मिथिलांचलक जीवन मे बढ़ेत पाश्चात्य प्रभावक इतिहास कहीं तें अनुचित नहि हैत।
गद्य–साहित्यक प्रसंग मे ई बात स्मरण रखबाक चाही जे विगत शताब्दी मे अधिकांश उपयोगी आ व्यावहारिक विषय सँ सम्बन्धित रचना भेल।

वर्तमान समयमे गद्य मे अनुवाद, आलोचना, इतिहास, उपन्यास, कथा, नाटक–एकांकी, निबन्धन पत्रिका, तथा विविध रूपमे ललित गद्य साहित्यक रचना भ' रहल, कारण जाहि–जाहि साधन द्वारा गद्यक विकास भेल अछि ओ सभ नवीन आवश्यकताक पूर्तिक लेल व्यावहारिक दृष्टि कोण मे सन्निहित अछि। साहित्यकार सभक द्वारा एकरा सजयबाक आ सँवारक कार्य कयल गेल। मैथिली गद्यक गाथा मिथिलांचलक नवजीवनक प्रभात कालीन चेतना, स्फूर्ति, ग्राहिका शक्ति आ गतिशीलताक आशा भरल गाथा थिक। जाहि दिन गद्यक कोनो प्रथम पृष्ठ प्रेस मे मुद्रित भेल हैत से। दिन सिस्सन्देह साहित्यिक क्रान्तिक दिन रहल हैत।

साहित्यक सृजन आ ओकर आलोचनाक धारा समानान्तर चलैछ। प्रत्येक युगक साहित्य एक एहन आलोचनाक उदभावना करैछ जे ओकर अनुरूप होइछ। एहि प्रकारें प्रत्येक युगक आलोचना सेहो ओहि युगक रचना कें अनुकूल स्वरूप प्रदान करैछ। वस्तुतः देश आ समाजक परिवर्तनशील प्रवृत्ति एक भाग साहित्य–निर्माण कें दिशा दैछ आ समीक्षा ओकर स्वरूप निर्धारित करैछ। अतएव रचनात्मक साहित्यक इतिहास आ समीक्षाक इतिहास मे धारावाहिकताक समानता रहैछ।

मैथिली मे आलोचनाक उदय विगत शताब्दी मे भेल आ एकर विचित्र स्थिति अछि. तथा ई ओकर सबसँ दुर्बल अंग थिक। विवेच्य कालक मैथिली आलोचना विधाक सम्पूर्ण विकास यात्रा कें दृष्टि मे राखि हम एकर तीन रूप निर्धारित कयल अछि। प्रथम रूप संस्कृत समालोचना सिद्धान्त वा निर्णयात्मक अछि। एहि प्रणालीक अनुगमन कयनिहार संस्कृत आचार्य लोकनि क रूप थिक। द्वितीय अछि पाश्चात्य समालोचना सिद्धान्त। तृतीय रूप अछि जाहि मे प्राचीन भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक समन्वय कयल गेल अछि। जीवनक नव परिस्थिति एवं नव सामाजिक चेतनाक कारण विशुद्ध भारतीय दृष्टिकोण अपनायब तँ असम्भव थिक। किन्तु दुर्भाग्यवश अन्य दू रूपक कोनों विशिष्ट आ निश्चित परम्परा स्थापित नहि भ' सकल अछि। साहित्यक उत्कर्षक संधि बेला मे आलोचना शास्त्र विभिन्न मतवादक अजायब घर बनि गेल अछि। ओकर प्रधान आधार वैयक्तिक रुचि–अरुचि अछि ने कि कोनो सिद्धान्तक आधार। एकहि आलोचकक समीक्षा मे परस्पर विरोधी बात आ कोकर सुसंगत रूप नहि भेटैछ।

वर्तमान मे प्रवणता सबसँ वेशी देखल जाइछ जे भारत एवं पाश्चात्यक विभिन्न विश्वविद्यालय मे मैथिली विषय पर अनुसंधान भेल अछि आ भ' रहल अछि जकर संख्या लगभग तीन सहस्रादिसँ अधिक अछि। किन्तु मैथिली अनुसंधान क जे स्थिति अछि ताहि पर कतिपय प्रश्न चिह्न लागि गेल अछि। अधिकांशतः अनुसंधान अप्रकाशित अछि। वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे ओरक प्रकाशनक प्रयोजन अछि जाहिसँ यथार्थ स्थितिक रहस्योद्घाटन भ' सकय तथा ई विधा अभिवर्द्धित भ' सकय।

साहित्येतिहासिक लेखन तँ ओहि साहित्यक दर्पण समान होइछ जकर अवलोकनहि सँ साहित्यक यथार्थताक परिज्ञान पाठक कें होइछ। विगत शताब्दी कें स्वर्णकाल उद्घोषित करबाक आ मातृभाषानुरागी प्रबुद्ध पाठक कें अपन मातृभाषाक गौरव–गरिमाक आख्यान प्रस्तुत करबाक लेल कतिपय इतिहासकार एकर साहित्यिक परम्पराक पुनराख्यान निमित्त साहित्येतिहासिक ग्रन्थक रचना आ ओकर प्रकाशन कयलनि। किन्तु एहि साहित्येतिहासिक ग्रन्थक अवलोकनोपरान्त निराश होमय पडैछ कारण निष्पक्ष मानें मैथिलीक वैज्ञानिक पद्धतिक अनुसारण क' कए अद्यापि इतिहास नहि लिखल गेल अछि जे चिन्तनीय विषय थिक। प्रत्येक इतिहासकार दलगत भावनासँ उत्प्रेरित छथि जाहि कारणे महत्त्वपूर्ण कृतिकारक चर्चा चर्चनल नहि भ' सकल अछि। एहि सन्दर्भ मे हम दुइ इतिहासक चर्चा करब। साहित्य अकादेमीक सत्प्रयास सँ प्रकाशित भेल जकर त्रुटिक प्रसंग मे पटनासँ प्रकाशित मिथिला मिहिरक कनोक अंक मे एकर भर्त्सना कयल गेल। युग संधिक उत्कर्ष बेला मे। प्रकाश मे आयल अछि जकरा कतिपय कारणें साहित्य जगत मे विवादास्पद ओ अपूर्ण से हो अछि जकरा इतिहास कहबा मे संकोचक अवबोध होइछ। वर्तमान संदर्भ मे प्रयोजन अछि एक एहन साहित्येतिहासक जाहि मे साहित्यक चथार्थ स्वरूपक उद्घाटन हो तथा उपेक्षित लेखक लोकनिक कृतित्वक सम्यक् स्पेण उल्लेख प्रवृत्तिक अनुरूप हो।

आधुनिक भारतीय भाषा साहित्यक अन्तर्गत उपन्यास लेखनक प्रादुर्भाव पश्चिमक नव सभ्यता आ प्रिटिंग प्रेसक देन थिक आ मानव जीवन कें समग्र रूप सँ देखबाक प्रयास मैथिली उपन्यासर्गत विगत शताब्दी क प्रथम दशक मे भेल। ई. एम. फॉस्टर (1987)क कथन छनि जे जीवनक गुप्त रहस्य कें समग्र रूप सँ अभिव्यक्तिक क्षमता जतेक उपन्यास मे अछि ओतेक अन्य कोनो विधा मे नहि। इएह कारण अछि जे विगत शताब्दीमे उपन्यास अपन सीमाक कारणें महत्त्वपूर्ण विधाक रूप मे साहित्य मे प्रवेश पौलक तथा प्रधान साहित्यिक रूप बनि गेल जकरा द्वारा मानव अपन वाह्य एवं आन्तरिक समस्यादि के सोझ रयबाक प्रयास मे संलग्न अछि।

आलोच्च काल में रंगमंचक अभावक कारण एकर प्रगति से बाधक सिद्ध भेल अछि। मैथिली मे एक साधु अभिनय शाला नहि भेला सँ पाठ्य साहित्यक विकासक गति एक विशेष दिशा में झुकि गेल अर्थात् एहन नाटकक निर्माण होइत रहल जे साहित्यिक आनन्दक इष्टिएँ सुन्दर रचना थिक, किन्तु रंगमंचीय विधानक दृष्टिएँ दोष पूर्ण अछि। विगत शताब्दीक नाट्य–साहित्य पर विवेचन करबा काल मात्र रंगमंच पर ध्यान नहि देबाक चाही। जँ रंगमंचकें नाटकक कसौटी मानि लेल जाय तँ विश्वक अनेक प्रसिद्ध नाट्य साहित्य पूर्व आ पश्चिम केंलन कए चलल छल, किन्तु शनैःशनैः ओ पश्चिमातनयुख अधिक भ'गेल अछि आ भारतीय तत्त्व नगण्य भेल जा रहल अछि। विगत 26 वर्ष सँ अनवरत चलि रहल अछि, किन्तु शेष पत्रिकादि कखन काल क्वलित भ' जायत ओ तँ भविष्य पर निर्भर करैछ।

विगत एवं वर्तमान सहस्राब्दी मैथिलीक जे उत्कर्ष जनमानसक समक्ष प्रस्तुत अछि तकर ज्वलन्त साक्षी थिक जे साहित्य निर्माताक संगहि संग प्रकाशनक सौविध्यक फलस्वरूप मैथिली साहित्य विफल परिमाणमे गद्य–पद्य साहित्यक प्रकाशन। भेल अछि तक श्रेय आ प्रेय मैथिली अकादमी आ साहित्य अकादेमी मे छैक। मैथिली अकादमी द्वारा विविध विधादिक स्तरीय ग्रंथ अद्यापि लगभग अढ़ाय सय तथा साहित्य अकादेमी द्वारा डेढ़ सय ग्रन्थक प्रकाशन भ' सकल अछि। एहि दृष्टिएँ कोलकाताक प्रवासी संस्थादि के छैक जे ओतय सँ विविध विधादिक सहस्राधिक मौलिक अनूदित पुस्तकक प्रकाशन संभव भ' सकल अछि जे एक प्रतिमान प्रस्तुत करैछ। एहि दिशा मे चेतना समिति अर्द्धशतक सँ वेशी पुस्तकक प्रकाशन कयलक अछि जे उल्लेख्य योग्य अछि। वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे प्रयोजन अछि जे अन्यान्य संस्थदि जे पुस्तक प्रकाशन में सक्रिय अछि तकर सिलसिलेवार ढंग सँ पुस्तक प्रकाशन मे सहयोग देथि। एहि सँ अतिरिक्त कतिपय साहित्यिक संस्था तथा। लेखक लोकनि अपन रूचिक अनुकूल साहित्यक प्रकाशन क' कए एकरा सम्बर्द्धित करबाक दिशा मे संलग्न छथि जे एहि साहित्यक रीढ़ के सुदृढ़ कयलक अछि। युगन्धिक अकर्ष बेला मे जेना पुस्तक प्रकाशनक बाढ़ि आबि गेल अछि।

निष्कर्षतः कहि सकै छी जे वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे ई श्रेय आ प्रेय बीसम शताब्दीकें छैक जे आलोच्च कालक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिक गद्य–साहित्य। जतय एक भाग परम्परागत मैथिली साहित्य अपन बन्धन मे बरोबरि बन्हने रहल आ अपना मेटबैत रहल ओतय निश्चये अभूतपूर्व आ निस्सन्देह गद्याक रूप मे प्रतिष्ठित भेल। आलोच्य कालीन गद्य मैथिली साहित्य मे एक नव युगक अवतारणा कयलक। साहित्येतिहास मे क्रम वद्ध परम्परा एहि शताब्दीक महत्त्वपूर्ण अवदान थिक जे अपन भविष्यक प्रति आशाक सम्बल लेने साहित्य मे प्रवेश कयलक आ ओकर

शबदकोश मे आश्चर्यजनक वृद्धि भेलैक। वस्तुतः आलोच्य शताब्दी गद्य–युग थिक जे अवतारणा आलोच्य कालीन गद्य थिक।

संदर्भ–संकेत :

1. प्रेमचन्द साहित्यक उद्देश्य, पृ. 54
2. डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी, साहित्य का साथी, पृ. 83
3. बाबू गुलाब राय, काव्य के रूप, पृ. 165
4. किशोरी लाल गोस्वामी, प्रणयिनी परिणय, उपोद्धात, पृ. 1
5. साहित्य संदेश (उपन्यास अंक) अक्टूबर–नवम्बर, 1940 पृ. 42
6. गद्य सं भूमिका, रामनाथ झा.
7. पुनर्विवाह, पृ. 10
8. सपर्मण, कन्यादान, पृ. 28
9. पृथ्वी पुत्रक भूमिका, श्री रमानाथ झा, पृ. 11